

न्यायालय राजस्व मण्डल, मध्यप्रदेश, ग्वालियर

समक्ष : अशोक शिवहरे
सदस्य

निगरानी प्र.क. 684-दो/2013 विरुद्ध आदेश दिनांक 03.1.2013 पारित -
द्वारा : कलेक्टर, जिला टीकमगढ़ - प्रकरण 18/पुनर्विलोकन/2012-13

श्रीमती शीला देवी पुत्री स्वामीप्रसाद नायक
ग्राम गोर तहसील मोहनगढ़ जिला टीकमगढ़
मध्य प्रदेश

-----आवेदिका

विरुद्ध

- 1- मध्य प्रदेश शासन
- 2- सीताराम पुत्र रगुआ सोर
निवासी मजगुवाँ तहसील जतारा टीकमगढ़
- 3- आशाराम 4- जगदीश 5- सुश्री बेटीवाई
- 6- प्रान सिंह 7- बिन्द्रावन सभी निवासीगण
ग्राम मजगुवा तहसील जतारा जिला टीकमगढ़

---अनावेदकगण

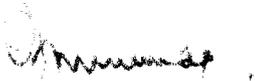
आवेदक के अभिभाषक श्री मुकेश वेलापुरकर
म0प्र0शासन के पैर अभिभाषक
अनावेदक क्रमांक 2 लगायत 7 सूचना उपरांत अनुपस्थित-एकपक्षीय

आदेश

(आज दिनांक 22.07.2014 को पारित)

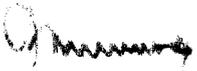
यह निगरानी कलेक्टर जिला टीकमगढ़ द्वारा प्र.क. 18/2012-13
पुनर्विलोकन में पारित आदेश दिनांक 3-1-2013 के विरुद्ध मध्य प्रदेश भू
राजस्व संहिता, 1959 की धारा 50 के अंतर्गत प्रस्तुत की गई है।

2/ प्रकरण का सारोँश यह है कि पुलिस अधीक्षक, टीकमगढ़ ने पत्र
क्रमांक पुअ/टीक/शिका/कलेक्टर/321/11 दिनांक 21-7-11 लिखकर
कलेक्टर टीकमगढ़ को अवगत कराया कि श्रीमती परमिया पत्नि डरू
आदिवासी, केशव तनय डरू आदिवासी, रामेश्वर तनय डरू आदिवासी निवासी



पूनोलख्रास थाना दिगोड़ा जिला टीकमगढ़ का आवेदन जांच हेतु प्राप्त हुआ, जिसमें लिखा है कि उ०प्र०झांसी जिले के सचिन गुप्ता, अमितु अग्रवाल ने मेरे पिता डरू तनय हरदास आदिवासी का अहरण कर पिता के नाम की भूमि की रजिस्ट्री कराने का संदेह होने एवं पिता की जमीन की रजिस्ट्री कराकर हत्या की आशंका है। आवेदकों के पिता के नाम प्रतापपुरा ओरछा में मौजा पटैती भूमि सवा तीन एकड़ है जिसके विक्रय करने के लिये कलेक्टर टीकमगढ़ से विक्रय की मंजूरी ली जाना और मंजूरी के समय बेंचने का अनुबंध कृपाराम यादव से किया जाने का लेख कराया है, जिससे समुचित कार्यवाही की जाकर अमल में लाई जावे। पुलिस अधीक्षक के इस पत्र को आधार पर मानकर कलेक्टर टीकमगढ़ ने प्रकरण क्रमांक 18 पुर्नविलोकन/12-13 पंजीबद्ध किया तथा तत्कालीन कलेक्टर टीकमगढ़ द्वारा प्रकरण क्रमांक 2/अ-21/2008-09 में पारित आदेश दिनांक 27-12-2008 को स्वमेव निगरानी में सक्षम अनुमति उपरांत ले लिया तथा सीताराम पुत्र रमुआ सोर, आशाराम, जगदीश, सुश्री बेटीवाई, प्रान सिंह, बिन्द्रावन सभी निवासीगण ग्राम मजगुवा तहसील जतारा जिला टीकमगढ़ को नोटिस देकर आदेश दिनांक 3-1-13 पारित किया एवं तत्कालीन कलेक्टर द्वारा आदेश दिनांक 27-12-08 से भूमिस्वामी सीताराम पुत्र रमुवां सोर निवासी मझगुवा को भूमि सर्वे क्रमांक 264/3, 264/4, 264/5, 264/6 कुल रकबा 1.545 हैक्टर (आगे जिसे वादग्रस्त भूमि सम्बोधित किया गया है) के विक्रय हेतु दी गई अनुमति निरस्त करते हुये आवेदिका के हित में हुये पंजीकृत विक्रय पत्र से अंतरण को संहिता की धारा 165 के अंतर्गत शून्य कर भूमि पूर्ववत विक्रय सीताराम पुत्र रमुआ सोर के नाम करने के आदेश दिये। इसी आदेश से परिवेदित होकर यह निगरानी है।

3/ आवेदिका के अभिभाषक एवं म०प्र०शासन के पैनल अभिभाषक के तर्क श्रवण किये तथा अधीनस्थ न्यायालय के अभिलेख का अवलोकन किया गया। अनावेदक क-2 लगायत 7 सूचना उपरांत अनुपस्थित रहने से एकपक्षीय है।



4/ आवेदिका के अभिभाषक एवं म0प्र0शासन के पैनल अभिभाषक के तर्कों पर विचार करने एवं अधीनस्थ न्यायालय के अभिलेख के अवलोकन से यह तथ्य निर्विवाद है कि पुलिस अधीक्षक, टीकमगढ़ ने पत्र क्रमांक पुअ/टीक/शिका/कलेक्टर/321/11 दिनांक 21-7-11 में यह कहीं भी नहीं लिखा है कि विक्रेता सीताराम पुत्र रमुआ सौर द्वारा आवेदिका के हित में गलत ढंग से अथवा अनियमितताओं के आधार पर ग्राम मझगुवा की भूमि सर्वे क्रमांक 264/3, 264/4, 264/5, 264/6 कुल रकबा 1.545 हैक्टर का विक्रय किया है और जब पुलिस अधीक्षक का प्रतिवेदन आवेदिका एवं अनावेदक क्रमांक 2 लगायत 7 से सम्बन्धित नहीं है तथा प्रतापपुरा ओरछा के भूमिस्वामी के संबंध में है - कलेक्टर टीकमगढ़ द्वारा बिना आधार पर के ग्राम मझगुवा की भूमि सर्वे क्रमांक 264/3, 264/4, 264/5, 264/6 कुल रकबा 1.545 हैक्टर के सक्षम अनुमति पर से हुये कय-विक्रय के विरुद्ध प्रकरण दर्ज करना बेआधार कार्यवाही होना पाई गई है।

5/ अधीनस्थ न्यायालय के अभिलेख से पाया गया है कि यह सही है कि वादग्रस्त भूमि के भूमिस्वामी सौर जाति का होकर अनुसूचित जनजाति का संबर्ग से है किन्तु यह भी सही है कि उसने कलेक्टर टीकमगढ़ के समक्ष वादग्रस्त भूमि के विक्रय करने की अनुमति हेतु आवेदन दिया है जिसमें उल्लेख किया है कि मौजा नन्दनपुर में भूमि स्थित होने एवं उसके ग्राम मझगुवा में रहने के कारण सुविधानुसार कृषि कार्य नहीं हो पा रहा है उसने अनुमति आवेदन के पद 2 में यह भी बताया है कि वादग्रस्त भूमि उसके पिता द्वारा कय की गई भूमि है पट्टे की नहीं है। कलेक्टर टीकमगढ़ द्वारा विक्रय अनुमति आवेदन की जांच अधीनस्थ अधिकारियों से कराई है नायब तहसीलदार मोहनगढ़ तहसील जतारा ने प्रतिवेदिन दिनांक 29-11-08 में बताया है कि -

“ ग्राम पचायत अभिमत, पटवारी प्रतिवेदन, आवेदक के कथन अनुसार आवेदित भूमि ख.

[Handwritten signature]

6/ कलेक्टर टीकमगढ़ द्वारा विक्रय अनुमति हेतु पारित आदेश दिनांक 27-12-2008 के अवलोकन पर पाया गया कि उन्होंने आदेश के अंतिम पद में इस शर्त पर विक्रय की अनुमति प्रदान की है -

“ आवेदक सीताराम पुत्र स्मुवाँ सोर निवासी मझगुवाँ को ग्राम नन्दनपुरा की भूमि खसरा क्रमांक 264/3, 264/4, 264/5, 264/6 कुल कित्ता चार कुल रकबा 1.545 है० भूमि विक्रय करने की अनुमति म.प्र.भू राजस्व संहिता 1959 की धारा 165 (7) ख के अंतर्गत वर्तमान गाइड लाइन के आधार पर विक्रय करने की अनुमति प्रदान की जाती है। ”

स्पष्ट है कि कलेक्टर टीकमगढ़ द्वारा विक्रय मूल्य, विक्रय दिनांक को प्रचलित गाईड लाइन के मान से आदान प्रदान करने का आदेश दिया है और उप पंजीयक द्वारा भी विक्रय पत्र - विक्रय दिनांक 31-12-2008 को प्रचलित गाईड लाइन के मान से संपादित किया है तब पुनरावलोकन हेतु लिया गया उक्त आधार विरोधाभासी होकर दुभावना अथवा किन्हीं अन्य मजदूरी / दवाव के कारण लिया जाना परिलक्षित है।

7/ कलेक्टर टीकमगढ़ द्वारा पारित आदेश दिनांक 27.12.2008 के परिप्रेक्ष्य में वादग्रस्त भूमि को अनावेदक क्रमांक-2 ने पंजीकृत विक्रय पत्र दिनांक 31-12-2008 से आवेदिका को विक्रय कर दी, जबकि कलेक्टर टीकमगढ़ ने अंतरिम आदेश दिनांक 15.12.2011 से आदेश दि. 27.12.2008 को पुनरावलोकन में लिये जाने का निर्णय लिया है, तब क्या अंतरिम आदेश दिनांक 15.12.2011 के क्रम में पारित आदेश दिनांक 3-1-13 पूर्वादेश दिनांक 27.12.2008 पर भूतलक्षी प्रभाव से लागू होगा ?

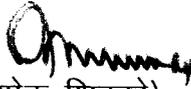
भू राजस्व संहिता, 1959 (गोप०) धारा 165 - ऐसा प्रावधान नहीं है कि विक्रय अनुमति प्रदान करने पर भूमि विक्रय - तत्पश्चात् आदेश पारित कर पूर्वानुमति निरस्त करते हुये विक्रय पत्र भूतलक्षी प्रभाव से शून्य घोषित किया जा सके।

किन्तु कलेक्टर टीकमगढ़ ने उक्तानुसार तथ्यों पर गौर न करने की त्रुटि की है।



8/ आवेदक के अभिभाषक ने तर्कों में बताया कि सदभावनापूर्वक आवेदन देकर आदेश दिनांक 27.12.08 से वादग्रस्त भूमि के विक्रय की अनुमति प्राप्त कर विक्रेता भूमिस्वामी ने आवेदिका के हित में भूमि विक्रय की है। कय-विक्रय पत्र दिनांक 31.12.2008 सदभावना पर आधारित है जिसे कारण तहसीलदार ने नामान्तरण आवेदन की पूर्ण जांच कर केता आवेदिका का नामान्तरण किया है। विक्रय पत्र संपादित होने के उपरांत नामान्तरण किये जाने तक किसी भी पक्ष ने विक्रय मूल्य कम प्राप्त होने की शिकायत नहीं की है केता एंव विक्रेता के मन में बद्धान्ति न होने से कय - विक्रय सदभाविक पाकर नामान्तरण किया गया है। इन समस्त तथ्यों के होते हुये विक्रय अनुमति आदेश दिनांक 27.12.2008 हस्तक्षेप योग्य नहीं है। इसी आशय के न्यायिक दृष्टांत प्र.क. 557/11/2013 में पारित आदेश दिनांक 21-5-12 में एंव अन्य प्रकरण क्रमांक 588/11/2013 में पारित आदेश दिनांक 16-7-13 में दिये गये हैं जिसके कारण कलेक्टर टीकमगढ़ द्वारा प्रकरण क्रमांक 18/पुर्नविलोकन/12-13 में पारित आदेश दिनांक 3-1-13 दोषपूर्ण होने से स्थिर रखे जाने योग्य नहीं है।

7/ उपरोक्त विवेचना के आधार पर निगरानी स्वीकार की जाकर कलेक्टर टीकमगढ़ द्वारा प्रकरण क्रमांक 18/पुर्नविलोकन/12-13 में पारित आदेश दिनांक 3-1-13 त्रुटिपूर्ण होने से निरस्त किया जाता है। परिणामतः वादग्रस्त भूमि पर विक्रय पत्र के आधार पर आवेदिका के नाम की शासकीय अभिलेख में की गई प्रविष्टि यथावत् रहती है।


(अशोक शिवहरे)
सदस्य

राजस्व मण्डल, म0प्र0ग्वालियर